मॉरीशस की हिंदी कविता: अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में

– डॉ. ज्योति एन. मंत्री

शोध सार :–

हिंदी काव्य साहित्य का समृद्ध एवं वैभवशाली रूप विश्व क्षितिज पर मॉरीशस में प्राप्त होता है । वर्तमान अवस्था में हिंदी अपनी सीमाओं को लांघ कर विश्व–परिदृश्य में, अपनी समस्त संकीर्णताओं से मुक्त एक निर्झरिणी की भाँति निनाद करती हुई अपने तटों को सींचती हुई प्रवाहित हो रही है । हिंदी मीलों का सफर तय कर, कई देशों की तरह ही भारतीय प्रवासी मजदूरों के साथ मॉरीशस में भी पहुंची एवं उनकी भावनिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनी। मॉरीशस का हिंदी साहित्य परतंत्रता काल से लेकर वर्तमान तक के विस्तृत दायरे को अपने में समेटे हुए हैं । मॉरीशस में कई साहित्यकारों ने अपनी अस्मिता अर्थात हिंदी काव्य को अपनी लेखनी के माध्यम से दिगदिगंत तक पहुंचाया है । मॉरीशस की कविता भारत और मॉरीशस के पुनर्जागरण का अभियान है, दोनों संस्कृतियों का जयघोष है । अतः यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि मॉरीशस की हिंदी कविता वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय काव्य–जगत में अपना प्रभुत्व स्थापित कर चुकी है ।

की–वर्ड :–

अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में हिंदी कविता का समृद्ध एवं वैभवशाली रूप हमें मॉरीशस में दिखाई देता है ।

प्रस्तावना :–

हिंद महासागर में अवस्थित मॉरीशस वह पहला देश है, जहां की सतरंगी भूमि पर सन 1834 में प्रवासी भारतीयों के चरण पड़े थे । तत्पश्चात भारतीय मजदूर, गिरमिटिया प्रथा में आबद्ध होकर निरंतर मॉरीशस ले जाए गए थे । इन भारतवंशियों ने अनपढ़ या अत्यंत कम पढ़े–लिखे होते हुए भी अपनी भाषा, संस्कृति की प्राणपन से रक्षा की है । कई पीढ़ियों तक अपने हिंदी–प्रेम को जीवित रखकर हिंदी साहित्य की ज्योति जलाई, जो कि वर्तमान अवस्था में विभिन्न देशों में भी विकीर्ण हो रही है । मॉरीशस के हिंदी पद्य का विकास यह स्वतंत्रता पूर्वकाल (सन 1923 से 1967) में हुआ । यह हिंदी की शैशवावस्था का काल था । किंतु इन कवियों ने हिंदी का जो बीजवपन किया था, वह बीज, पौधा बन, आज वृक्ष के रूप में मॉरीशस में लहलहा रहा है । मॉरीशस के कवियों ने अपने काव्य द्वारा पराधीन मॉरीशस वासियों को राजनीतिक परतंत्रता से मुक्त कराने हेतु, राष्ट्रीय चेतना फूंकने का महती कार्य किया है । साथ ही साथ परतंत्रता के पश्चात अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी और अपने देश की पहचान बना सके ऐसे महनीय काव्य–साहित्य का सृजन भी किया है ।

आमुख :–

मॉरीशस, फीजी, युगांडा, ट्रिनीडाड, सूरीनाम, नेपाल, गुयाना, जापान आदि देशों में हिंदी, बोली एवं समझी जाती है । साथ ही इनमें से भारत से बाहर कई देशों में हिंदी साहित्य अपने चरम पर विराजमान है । इन देशों के आरंभिक हिंदी–साहित्य का, हिंदी भाषा तथा साहित्य को समृद्ध करने में अक्षुण्ण योगदान रहा है और आज यह संपूर्ण देश हिंदी साहित्य हेतु विश्व में अपनी अमिट छाप छोड़ने में समर्थ है । "भारत के बाहर विश्व में ऐसे 137 देश है जहां हिंदी बोली या समझी जाती है और 46 देशों में हिंदी के अध्ययन, अध्यापन की व्यवस्था है । .... भारत के बाहर 95 विश्वविद्यालयों में हिंदी का शिक्षण कार्य चल रहा है ।"1 अतः हम कह सकते हैं कि हिंदी–साहित्य के विकास हेतु समस्त देशों का योगदान 'मील के पत्थर' की तरह है ।

मॉरीशस के काव्य में स्वतंत्रता पूर्व से लेकर वर्तमान अवस्था तक कई कवियों का योगदान रहा है, जिनमें प्रमुख रूप से – पं. लक्ष्मी नारायण चतुर्वेदी 'रसपुंज', श्री ब्रजेंद्र कुमार भगत 'मधुकर', पं. हरिप्रसाद रिसाल मिश्र, मुनीश्वरलाल चिंतामणि, विष्णुदत्त मधु 'चंद,' जयरूद्ध दोसिया, सोमदत्त बखौरी, हरिनारायण सीता, पं ठाकुरप्रसाद मिश्र, पं रामरतन रिसाल मिश्र, अभिमन्यु अनत, इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ, हेमराज सुंदर, विष्णुदत्त मधुचंद, पं. बौद्धनाथ रामनाथ पांडे, ठाकुरदत्त पांडेय, मुनेश वासुदेव मोहन, गौतम रसाल, रविशंकर कौलेशर, भोला गुरबिन, पूजानंद नेमा, सूर्यदेव सिबरत, महिदत्त, नेमा, देवनन हेमराज, रामदेव हेमराज, सत्यानंद फेकू, धनराज शंभू, पूर्णिमा निगम, भवानी शंकर, लोक प्रकाश हीरू, वेणीमाधव रामखेलावन, धर्मानंद मंटू आदि । इनमें कई नए–पुराने कवि भारत को अपनी आत्मा में बसाए, मॉरीशस के धरती की प्रेम रज्जू में आबद्ध हो, हिंदी साहित्य की सेवा कर रहे हैं । इसीलिए हिंदी प्रचारिणी सभा मॉरीशस के तत्कालीन अध्यक्ष अजामिल माताबदल कहते हैं – "भारत से बाहर हिंदी साहित्य का सबसे समृद्ध रूप मॉरीशस में ही देखने को प्राप्त है । अंग्रेजी औपचारिक भाषा और फ्रेंच सबसे अधिक प्रचलित होने के बावजूद मॉरीशस में हिंदी सबसे अधिक प्रकाशित है ।"2

मॉरीशस की इन्हीं विशेषताओं को देखते हुए मॉरीशस की ही एक बात जिसने मुझे अत्यंत आकर्षित किया है उसे यहाँ लिखने का लोभ मैं संवरण नहीं कर सकती – मॉरीशस में हर गाँव और नगर में समय–समय पर रामायण के पाठ, भजन–कीर्तन एवं कथाएं होती रही है, उनमें वहाँ के लोग जो दिनभर कोड़े खाते, जी–तोड़ परिश्रम करते, वे बड़े उत्साह से हिस्सा लेते थे और "इन आयोजनों में जो कुछ चढ़ावा आता है उसे हिंदी के अध्यापन पर खर्च किया जाता है ।"3 कितना बड़ा योगदान, कितनी विराट संकल्पना थी, उन अनपढ़ लोगों की, जो हर पाठक के हृदय को आंदोलित किए बिना नहीं रह सकती । क्या हिंदी भाषा को हृदय–हृदय में स्थान दिलाने वाले उन प्रथम हिंदी सेवियों की यह सेवा वंदनीय नहीं है? जहाँ हिंदी भाषा के प्रति ऐसी एकनिष्ठता हो उस देश के हिंदी – साहित्य का भंडार तो समृद्ध रहेगा ही । कहा जाता है – "मॉरीशस की भूमि पर पले जन्मे कवियों में पहला कवि एक मुसलमान रहा है । इनकी कविता 1892 के तूफान पर लिखी गई है ।"4 उस समय

यह कविता इतनी प्रसिद्ध हुई कि आज तक लोग उस रचना को 'साइक्लोन मियां' की रचना के नाम से ही जानते हैं । पं. लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी 'रसपुंज' ने स्वतंत्रतापूर्व सन 1923 में 111 कुंडलियों का प्रथम काव्य–संग्रह 'रस–पुंज कुंडलिया' शीर्षक से प्रकाशित किया । तत्पश्चात 1935 में उनकी दूसरी पुस्तक 'शताब्दी सरोज' प्रकाशित हुई थी । तब से चलने वाला हिंदी का यह प्रवाह निरंतर निर्बाध गति से प्रवाहित हो रहा है ।

तत्पश्चात मॉरीशस के राष्ट्रकवि ब्रजेंद्र भगत 'मधुकर' की लोकप्रियता का प्रथम प्रतीक 'मधुपर्क' का प्रकाशन हुआ । मधुकर जी की लगभग 49 काव्य–कृतियाँ हैं, जिनमें से लगभग 40 प्रकाशित है । कुछ प्रकाशित किंतु अप्राप्य है तथा कुछ प्रकाशित ही नहीं हो पाई । किंतु उनकी पांडुलिपि डॉ. कमल किशोर गोयनका, दिल्ली के पास होने से उन्होंने मधुकर जी की काव्य–रचनावली में उन अप्रकाशित काव्य–कृतियों को समाहित किया है । मधुकर जी की रचनाओं में परतंत्रता का दुख, देश को स्वतंत्र कराने की छटपटाहट मिलती है । मधुकर जी अपने काव्य द्वारा ऐसे विचार–दर्शन की अभिव्यक्ति करते रहे, जिससे राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम को सही दिशा मिल सके । आपका साहित्य स्वतंत्र राष्ट्र की आजादी को सार्थक बनाने का मूल मंत्र भी प्रस्तुत करता है । राष्ट्रीय चेतना के धनी मधुकर जी अपने देशवासियों के देश–प्रेम को जागृत करते हुए लिखते हैं –

"ऐसे सोने के बंधन से स्वस्थ भरी धूली है अच्छी,
जिससे जीवन–सिंहद्वार की प्राप्ति होती कुंजी सच्ची।"5

बंधन चाहे स्वर्ण का क्यों न हो किंतु वह बंधन ही होता है । 'रणभेरी', 'स्वराज्य गीतांजली', मधुकर जी के राष्ट्रीय कविता संग्रह है, इनमें कवि की ज्वलंत देशभक्ति के दर्शन होते हैं । वैसे मॉरीशस का अधिकतम काव्य प्रधानतःमुक्तक रहा है किंतु मधुकर जी के काव्य संग्रह आकार में लघु तथा सरस एवं गेय रहे हैं ।

पं. हरिप्रसाद रिसाल मिश्र और जयरूद्ध दोसिया यह दोनों स्वतंत्रता पूर्व काल के कवियों में स्मरणीय है । बचपन से ही इन्हें हिंदी के प्रति अनुराग था । इनकी रचनाओं में देशभक्ति छलकती है । साथ ही भावों की तीव्रता, कल्पना की प्रचुरता और भाषा की स्वाभाविकता इनके काव्य का गुणधर्म है । पं. हरिप्रसाद जी ने छंदों तथा अलंकारों का गहन अध्ययन भी किया था । उसकी यह फलश्रुति ही थी कि वे 'छंद वाटिका' जैसी छंद और अलंकार की वर्णनात्मक पुस्तक का सृजन कर सकें । इनकी 'भजनमाला' पुस्तक को गायकों ने विशेष रूप से आत्मसात किया था । 'सुधाकलश' दोसिया जी की कविताओं का संग्रह है, जिसमें मुक्त छंद के अतिरिक्त कई छंदों का समावेश है ।

अपने छात्र जीवन से ही परिश्रम–शील एवं विद्यानुरागी श्री मुनीश्वरलाल चिंतामणि के लगभग 10 कविता संग्रह का प्रकाशन हो चुका है । इन्होंने छंदों के बंधन तोड़कर कविता मुक्त छंद में लिखना शुरू की एवं 'शांति निकेतन की ओर' कृति द्वारा पहली बार मॉरीशस में नई कविता की नींव डाली । 'बापू फिर आओ एक बार' कविता में दीन – दुखियों के प्रति आपकी पीड़ा कुछ यों छलक पड़ी है –

"यहाँ दलित दुखियों के त्राता कहाँ

कौन यहाँ पोछेंगा विवश अश्रुकण असहाय जनों के
हे युग के नैनो के तारा
जन–जीवन को नव आलोक देने के हेतु फिर ले लोक अवतार
बापू, फिर आओ एक बार।"6

चिंतामणि जी की कविताओं में संघर्ष तथा पीड़ा के बावजूद एक नई आशा एवं नया स्वप्न पलता है । आपने हिंदी लेखकों को एक मंच पर लाने हेतु सन 1961 में 'मॉरीशस हिंदी लेखक संघ' की स्थापना की । संघ ने साहित्यिक गोष्ठियों के आयोजन के साथ ही मॉरिशस में कवि सम्मेलन की परंपरा को भी जीवनदान दिया । कवि का 'ध्वनन' काव्य–संग्रह भाषा, भाव, विचार, चिंतन आदि दृष्टियों से अत्यंत प्रौढ़, सघन, कलात्मक एवं उत्कृष्ट काव्य–कृति है ।

मॉरीशस की हिंदी कविताओं में सोमदत्त बखोरी जी का प्रमुख स्थान है । आपके अनुसार वर्तमान परिवेश में नौकरी प्राप्त करने के लिए मात्र डिग्री या डिप्लोमा प्राप्त कर लेना पर्याप्त नहीं है, अपितु चाटुकारिता का पाठ पढ़ना महत्वपूर्ण है । जैसे –

"विख्यात लेखन महाविद्यालय से
बड़ी उम्मीद लेकर सीखी पत्रकारिता
पर नौकरी न मिली
सीखना थी बाकी अभी चाटुकारिता।"7

उपरोक्त पद्य में बखोरी जी ने यथार्थ की सटीक अभिव्यक्ति के साथ ही व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य भी किया है । आपने हिंदी साहित्य सृजन को बढ़ावा मिलने हेतु संपूर्ण मॉरीशस में 18 हिंदी परिषदों की स्थापना कर नवोदित लेखकों के लिए एक साहित्यिक वातावरण की सृष्टि की । उनके इस प्रयास से कई नवोदित साहित्यकार प्रकाश में आए । इसके पश्चात हरिनारायण सीता ने अपनी सरल, रोचक, भाषा–शैली की वजह से विशेष स्थान प्राप्त किया । संगीत, नाद, सौंदर्य, भाव और प्रवाह की दृष्टि से आपके गीत प्रशंसनीय है –

"वीणा के तार टूटे टूटी गीत की कड़ियाँ मेरी
रह गई शून्य में उठकर हाथों की उँगलियाँ मेरी
पर निकल पड़ी नैनों से आंसू की लड़ियाँ मेरी
वीणा के तार टूटे टूटी गीत की कड़ियां मेरी।"8

बदले हुए वर्तमान मानदंड, भौतिक संसाधनों की वजह से पल–पल बदलता हुआ परिवेश इन सब से कवि भी अत्यंत चिंतित है । उसे परिस्थितियों के दास बन गए मनुष्यों की वजह से, हमारी मान – मर्यादा अर्थात गुरुता मिटने का भय है, अतः इन उपकरणों पर व्यंग्य करते हुए रामरतन रिसाल मिश्र 'बिखरे सुमन' कविता में लिखते हैं –

"सिनेमा, रेडियो, टेलिविजन ये ही है हम देख रहे।
सुनते हैं बातें इन्हीं की विचित्र है वन भेख रहे।
घर की सजावट निराली है विषय विकार बढ़ाती है।
हाव भाव सब बिगड़ रहे है गुरुता मिटती जाती है।"9

प्रस्तुत पद्य के द्वारा आपने अपनी संस्कृति पर मीडिया द्वारा हो रहे विभिन्न आघातों को चित्रित करते हुए सामान्य जन को सजग करने का प्रयास किया है । मॉरीशस का इतिहास मजदूरों के दुख एवं संघर्ष का रहा है । फ्रेंच शासकों के अत्याचारों की स्मृति आज भी उनके वर्तमान की रोशनी को अंधकाराच्छन्न कर देती है । इसी दर्द को मारीशस के साहित्यकार अभिमन्यु अनत यों अभिव्यक्त करते हैं –

"धूप की जलती सलाखों को
नंगी पीठ पर सहता हुआ
तुम्हारी सलीब को ढोये जा रहा हूं
मेरी यात्रा को सुगम बनाने के वास्ते
मेरी भात की टोकरी
तुमने अपने हाथ में ले ली है ।"10

कवि पीड़ा के इस अंधकार से निकलने का प्रयास तो करते हैं किंतु सुख रुपी प्रकाश उन्हें शासकों के हाथ की कठपुतली बना हुआ प्रतीत होता है । उपरोक्त वर्णित श्रेष्ठतम कवियों के अनन्य हिंदी प्रेम का ही प्रतिफल है कि, इनमें से कई कवियों को विभिन्न पुरस्कारों, सम्मानों एवं उपाधियों में से किसी न किसी सम्मान से विभूषित किया गया है । मॉरीशस के स्वतंत्रता संघर्ष के समय लिखी गई कविताओं में देश को स्वतंत्र कराने का संकल्प पाया जाता है । साथ ही मानवीय स्वतंत्रता के नए आयाम को तलाशते हुए हम कवि को पाते हैं । मॉरीशस के हिंदी साहित्य के विकास में महात्मा गांधी संस्थान की पत्रिका 'वसंत' का योगदान अभूतपूर्व है । विश्व के लगभग 80 देशों में इसकी प्रतियाँ जाती है जो कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मॉरीशसीय साहित्य को पहुंचाती है ।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि समस्त देशों की तरह मॉरीशस के कवियों ने भी अपने देश के भक्ति, पूजन, वंदन, प्रकृति–चित्रण के साथ कई भावों को उकेरा है । इनकी कविताओं में हमें मानवीय करुणा और मानव प्रेम के सहज दर्शन होते हैं । इसीलिए तो कहां गया है – "मॉरीशसीय हिंदी लेखन सही मायने में अंतर्राष्ट्रीय है । उसमें एकाधिक संस्कृतियों का बिंब–प्रतिबिंब एकसाथ उजागर होता है । उसका यह वैशिष्ट्य विश्व हिंदी को अनुपम देन है ।"11 वास्तव में मॉरीशस के कवियों की कविताओं के कथ्य में हमें कई नई धारणाएं एवं नए मोड़ प्राप्त होते हैं । इस तरह मेरा यह मानना है कि मॉरीशस का साहित्य अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में

परिमार्जित तथा प्रौढ़ता की ओर अग्रसर हुआ है तथा मॉरीशस की हिंदी कविता ने मजबूती से अपने पैर जमा लिए हैं । साथ ही विश्व पटल पर हिंदी को समृद्ध करने में मॉरीशस की हिंदी कविता का अमूल्य योगदान रहा है । इस तरह मॉरीशस में हिंदी कविता की अखंड परंपरा प्रवाहित हो रही है । इन कवियों में युग बोलता है, जीवन जैसे जीवन्त हो गया है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1) इंद्रदेव भोला – इंद्रनाथ, प्र सं 2003 – भारत से बाहर विदेशों में हिंदी तथा मॉरीशस हिंदी साहित्य की पृष्ठभूमि में हिंदी लेखक संघ की भूमिका (1834 से 2002 तक) – मॉरीशस हिंदी लेखक संघ, मॉरीशस, पृ. सं. 3–4

2) संपादक – राकेश पांडे – प्र सं 2003 – मॉरीशस भारतीय संस्कृति का अप्रतिम तीर्थ, राजपथ प्रकाशन, गीता कॉलोनी, दिल्ली, पृ. सं. 41

3) जितेंद्र कुमार मित्तल – 'देश और निवासी' माला 9, मॉरीशस, पृ. सं. 51

4) डॉ. लता – मॉरीशस का हिंदी साहित्य, जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. सं. 23

5) ब्रजेंद्र भगत 'मधुकर'–'रसरंग', ब्रजेंद्र भगत मधुकर काव्य रचनावली–सं डॉ.कमलकिशोर गोयनका, नटराज प्रकाशन, दिल्ली, पृ. सं. 93

6) अनु–अजामिल माताबदल–मॉरीशस में खड़ी बोली हिंदी की व्यवस्था और प्रसार, मुद्रण–महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस, पृ. सं. 73

7) डॉ सतीश चंद्र अग्रवाल, सं. 2012–मॉरीशस का हिंदी साहित्य एक समृद्ध परंपरा– आधारशिला प्रकाशन, दिल्ली, पृ. सं. 90

8) हरिनारायण सीता–अधूरा गीत, मॉरीशस की हिंदी कविता–सं अभिमन्यु अनत, महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस, सन् 1975, पृ. सं. 28

9) डॉ. लता – मॉरीशस का हिंदी साहित्य, जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. सं. 29

10) अभिमन्यु अनत – कविता–तुम्हारी तीन विशेषताएं– अभिमन्यु अनत प्रतिनिधि रचनाएं–सं कमलकिशोर गोयनका, नटराज प्रकाशन दिल्ली, पृ. सं. 158

11) डॉ. सतीश चंद्र अग्रवाल, सं 2012–मॉरीशस का हिंदी साहित्य एक समृद्ध परंपरा– आधारशिला प्रकाशन, दिल्ली, पृ. सं. 173

एसोसिएट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, श्रीमती केशरबाई लाहोटी महाविद्यालय, अमरावती (म.रा)

भ्रमणध्वनी – 94217 88687, jyotibhutada40@gmail.com